संगम पर लगा है परमात्म मेला
ख़त्म कर दिया अब सारा झमेला
सर्व सम्बन्धो की देकर अलौकिक पालना
बन्धमुक्त कर दिया दे जीवनमुक्ति का वर्सा
जन्मों के पापों का सर पर था जो बोझा
याद की शक्ति से हर लिया दुःख वो सारा
आत्मा को स्वराज्यधिकारी बनाया
तख़्त ताज़ और तिलक दिलाया
अपने दिल के सिंघासन पर बैठाया
विश्व महाराजन की उपाधि पर सजाया
नवनिर्माण करी सृष्टि जो थी पुरानी
बंद करी आधे कल्प की विकारी कहानी

पुरुषोत्तम हमें संगम पर बना कर दिखाया
सच्ची गीता का सन्मुख पाठ शिक्षक बन पढ़ाया
सतगुरु बन वरदानों से श्रृंगारा
स्वधर्म है शांति उसमें रहना सिखाया
त्रिवेणी का लगा कुम्भ का मेला
ज्ञानगंगाओं ने सबको डुबकी लगवाया
पतित पावन शिव पिता से मिलन मनाया
रूद्र ज्ञान अश्वमेध यज्ञ में कर दिया सब स्वाहा
आत्मा कंचन बन घर शान्तिधाम को लौटी
स्वर्ग में अपना पार्ट बजाने फिर देव बन उतरी